निबन्धात्मक एवं वस्तुनिष्ठ परीक्षाओं में अन्तर

विशेष बिन्दु	निबन्धात्मक परीक्षा	वस्तुनिष्ठ परीक्षा
प्रश्न पूछना	प्रश्नों की रचना करना सरल कार्य है। इसमें प्रश्नों की संख्या कम होती है वे सामान्य प्रकार के होते हैं इनके उत्तर लम्बे (Extend answers)	(1) प्रश्नों की रचना करना अपेक्षाकृत कठिन कार्य है। एक आदेश तथा विशिष्ट (Specific) होते हैं उत्तर छोटे (brief) होते हैं।
विषय वस्तु	सीमित पाठ्यवस्तु का मूल्यांकन होता है।	(2) पाठ्य वस्तु के व्यापक रूप का मूल्यांकन सम्भव होता है।
उद्देश्य प्राप्ति	अवबोध उद्देश्य की प्राप्ति सफलतापूर्वक हो जाती है	(3) ज्ञान उद्देश्य की प्राप्ति सफलतापूर्वक हो जाती है
सार्थकता	ये परीक्षाएं, उपलब्धि परीक्षा चयन एवं वर्गीकरण के लिए अधिक उपयुक्त हैं	(4) ये परीक्षाएं निष्पत्ति परीक्षा, निदान, बुद्धि एवं प्रवणता परीक्षाओं आदि के लिए उपयुक्त हैं।
अभिव्यक्ति तथा चयन	परीक्षार्थी प्रश्न का उत्तर अपने शब्दों में देने में पूर्ण स्वतंत्र है	परीक्षार्थी को दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन करना होता है
प्रतिदर्श	ये परीक्षाएं प्रश्नों के एक छोटे न्यादर्श पर आधारित होती है	ये परीक्षाएं प्रश्नों के एक बड़े न्यादर्श (large Sample) पर आधारित होती है
लेखन कला	परीक्षार्थी के सुन्दर लेख एवं अभिव्यक्ति कौशल का प्रभाव उसके अंकों पर पड़ता है इसके परीक्षार्थी सोचता है व लिखता है	लेखन कला का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। इसमें परीक्षार्थी पहले [illegible] से [illegible] है।

निबन्धात्मक एवं वस्तुनिष्ठ परीक्षाओं में अन्तर

विशेष बिन्दु	निबन्धात्मक परीक्षा	वस्तुनिष्ठ परीक्षा
परीक्षक मनोवृत्ति	परीक्षक की मनोवृत्ति हावी रहती है	परीक्षक के मनोवृत्ति [illegible] प्रश्न-पत्र निर्माण में बाधक हो सकती है मूल्यांकन [illegible] नहीं
परीक्षार्थी एवं परीक्षक की स्वतन्त्रता	दोनों स्वतन्त्र हैं। परीक्षार्थी उत्तर देने में और परीक्षक अंक प्रदान करने में	दोनों की स्वतन्त्रता पर अंकुश लग जाता है परीक्षार्थी एक विकल्प चुनने में स्वतन्त्र है
विश्वसनीयता एवं वैधता	इन परीक्षाओं की विश्वसनीयता एवं वैधता निम्न स्तर की होती है	इन परीक्षाओं की विश्वसनीयता एवं वैधता उच्च स्तर की होती है
मानक	परीक्षा के मानक स्थापित नहीं किए जा सकते।	इन परीक्षाओं के प्रामाणिक मानक स्थापित किए जा सकते हैं
अंकन	परीक्षक को विषय पर पूर्ण अधिकार होने पर ही अंकन ठीक प्रकार से सम्भव है।	अंकन प्रक्रिया सरल है निर्धारित कुंजी की मदद से कोई भी अंकन कर सकता है
प्रशासन	प्रशासन सरल होता है कोई विशेष निर्देश देने की आवश्यकता नहीं पड़ती।	प्रशासन अपेक्षाकृत कठिन होता है विशेष निर्देशों को देने में प्रशिक्षण एवं सावधानी होना आवश्यक है।
अंक वितरण	परीक्षक स्वयं अंक सीमा निर्धारित करता है जैसे उच्च स्तर के लिए वह 60–80% तथा असंतोषजनक उत्तर के लिए 10–25% अंक निर्धारित कर लेता है।	परीक्षक स्वयं अंक सीमा निर्धारित कर सकते परीक्षक को कोई छूट नहीं दी जाती।

Scanned with CamScanner

मापन के प्रायोगिक प्रकार

1. चयन मे (in Selection);
2. वर्गीकरण (classification)
3. तुलना (Comparison)
4. निर्देशन और परामर्श।
5. कक्षा मे शिक्षण का सुधारना (Improving Classroom Instruction)
6. शोध (Research)
7. निदान (Diagnosis)

(1) चयन

अर्थ। उद्योगो मे अन्य संगठनो मे मनोवैज्ञानिक की सहायता से कर्मचारियों तथा व्यक्तियों का (विद्यार्थियों) चयन किया जाता है।

(2) वर्गीकरण

वर्गीकरण करना भी आवश्यक होता है कक्षा मे विभिन्न प्रकार के बच्चो को अलग-2 करने की प्रक्रिया वर्गीकरण कहलाती है। कक्षा मे कुछ असाधारण बच्चे होते हैं, कुछ सामान्य बच्चे होते हैं।

(3) तुलना (Comparision)

गाल्टन और डार्विन के प्रारम्भिक शोधो मे से यह ज्ञात हुआ कि कोई भी दो व्यक्ति समान नही हो सकते अर्थात शारीरिक गुणो मे मानसिक प्रक्रियाओ मे, आदतो मे, प्रवृत्तियों, शैक्षिक उपलब्धियो तथा क्षमताओ मे वैयक्तिक भिन्नता पाई जाती है। उपर्युक्त मापन की सहायता से यह कहना सम्भव होता है कि छात्र A, B मे गाव व राशि की तुलना मे अन्तर है।

Scanned with CamScanner

(5) कक्षा में शिक्षण का सुधारना

एक अध्यापक कक्षा में सभी छात्रों को पढ़ाता है परन्तु वह सोचते है कुछ नहीं सीखते इसका कारण उनकी मानसिक क्षमता है क्योंकि अध्यापक को मानसिक क्षमता के अनुरूप शिक्षण करना चाहिए क्षमता से मापते है।

(6) शोध

मापन शोध कार्य / क्रियाओं में सहायक है वस्तुतः मापन सभी प्रकार के शैक्षिक और मनोवैज्ञानिक शोध का मजबूत आधार है शोध नवीन तथ्यों को खोजने की प्रक्रिया है।

(7) निदान

शैक्षिक निदान में अनेक तकनीकी प्रविधियों का प्रयोग होता है जिनका उद्देश्य सीखने की मुख्य एवं विशिष्ट कठिनाइयों का पता लगाना है और यदि संभव हो तो उनके कारण का पता लगाना तथा उनके निराकरण का प्रबन्ध करना। Exm - डाक्टर एक व्यावसायिक यंत्रों जैसे थर्मामीटर, स्टेथोस्कोप, माइक्रोस्कोप आदि प्रयोग

कठिनाइयां दो प्रकार की होती है।

कठिनाइयों के प्रकार

- सामान्य कठिनाइयां — Diagnostic General
- विशिष्ट कठिनाइयाँ — Diagnosis of Specific weakness

जैसे - सुनना, बोलना, देखना, स्मरण स्तर, भाषा स्तर, वाक्य स्पष्टता है

Scanned with CamScanner

मापन के प्रकार एवं त्रुटियों का वर्णन

मापन के प्रकार
"Kinds of Measurement"

मापन उपकरण या विधि या उनसे प्राप्त परिणामों

स्टीवेन्स ने मापन के चार सामान्य स्तरों का उल्लेख किया है।

1. नामित मापन (Nominal Measurement)
2. क्रमित मापन (Ordinal ")
3. आन्तरिक मापन (Interval " अन्तराल मापन)
4. अनुपातिक मापन (Ratio ")

(1) नामित मापन (Nominal

अर्थ: "इनमे व्यक्तियों अथवा घटनाओं को किसी गुण या विशेषता के आधार पर कोई नाम, शब्द, अंक या संकेत प्रदान किया जाता है। इनमें कोई क्रम या सम्बन्ध अंतर्निहित नहीं रहता है। यह एक गुणात्मक मापन है तथा प्राप्त मानों या संकेतों से कोई भी संक्रिया जैसे- जोड़, घटना गुणा आदि सम्भव नहीं है।

Exm— पिन कोड, ATM नंबर, खाता संख्या, रजिस्ट्रेशन संख्या, मोबाइल नंबर

Scanned with CamScanner

(2) क्रमित मापन

अर्थ: "यह मापन गुणों की मात्रा के आधार पर आधारित होता है जिस कारण विभिन्न श्रेणियों या उप समूहों में एक निश्चित क्रम होता है। वर्गों के कोई नाम या प्रतीक प्रदान करते हैं।

क्रमित मापन भी नामित मापन की भाँति गुणात्मक मापन है इसमें प्रत्येक समूह के सदस्यों की संख्या ज्ञात की जा सकती है किन्तु गणितीय संक्रियाएं सम्भव नहीं है। Exm- सुन्दरता प्रतियोगिता, फार्मूला वन रेस कक्षा में प्रथम I, II, III (इस मापन में व्यक्तियों, वस्तुओं घटनाओं, विशेषताओं या प्रक्रियाओं को किसी गुण के आधार पर एक क्रम (Hierarchical order) में आरोही या अवरोही में व्यवस्थित करते हैं।

(3) अन्तरित मापन

यह मापन गुणों की मात्रा पर आधारित होता है गुणों की मात्रा को इस प्रकार श्रेणीबद्ध किया जाता है कि प्रत्येक उप श्रेणी में अन्तर समान रहता है। शैक्षिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक चरों का मापन अन्तरित पैमाने पर किया जाता है।

अंतरित मापन में प्राप्त अंकों के साथ जोड़ तथा घटाना तो सम्भव है किन्तु गुणा व भाग सम्भव नहीं है।

Exm- $-3\ -2\ -1\ 0\ +1\ +2\ +3\ +4$

शून्य काल्पनिक माना जाता है-

इस मापनी के अन्दर बिन्दुओं, व्यक्तियों, वस्तुओं के मध्य अन्तर को अंकों के माध्यम से प्रदर्शित करते हैं

Exm- दो वस्तुओं को 5 और 10 अंक दिए गए हैं तो 5 वाली वस्तु की 10 वाली वस्तु से दूरी उतनी ही होगी जितनी 15 से 20 वाली। |— 5 — 10 — 15 — 20